ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

नारी – तू अबला नहीं

ऋचा अग्रवाल

कितनी बडी विड़म्बना है कि हमारा भारत देष सदा से ही नारी की श्रेष्ठता पर प्रष्नचिन्ह लगाए खडा है। नर को श्रेष्ठ और नारी को अबला कहकर हमारे समाज को दो हिस्सों में बांटा जाता रहा है। परन्तु सत्य तो ये है कि पृथ्वी और ब्रहााण्ड़ की रचना के प्रारंभ से ही भगवान षिव को सृष्टि के निर्माण हेतु अर्धनाटेष्वर का रूप धारण करना पडा, यहां तक कि विद्या प्रदान करने, धन ऐष्वर्य देने तथा दुष्टों का मर्दन करने जैसे कार्यो के लिए भी नारी की महत्ता की प्रतिष्ठा करनी ही पड़ी।

कहा गया है कि जहां नारी है वहीं कलाएं हैं और कला मानवता का दिव्यता की ओर अग्रसर होने का प्रयास नहीं तो और क्या है? पर सदियों से हमारे देष में नारी का केवल मां, पत्नी, बहन अथवा बेटी का रूप ही मान्य रहा है और घर की चारदीवारी उसकी दुनिया। तभी तो मैथिलीषरण गुप्त जी ने कहा है–

अबला जीवन हाथ तेरी यही कहानी।

आँचल में है दूध और आंखों में पानी।।

किन्तु क्या हम सब नारी के केवल इस अबला रूप से ही परिचित है? क्या उसके सबल एवं दृढ़ व्यक्तित्व की छाप समाज के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर नहीं होती? वस्तुतः राष्ट्र निर्माण की सुदृढता की नींव तो नारी ही है। नारी ही जननी बनकर सुयोग्य नागरिको को जन्म देती है, बहन बनकर भाई के हित की कामना करती है, पत्नी बनकर त्याग और सेवा का आदर्ष प्रस्तुत करती है और बेटी बनकर उसे अपने अस्तित्व के होने का अहसास कराती है।

किसी कवि के शब्दों में **''नारी तो नारी है, चाहे वो माँ हो, बहन हो अथवा पत्नी नारी तो एक शमा है क्योंकि त्याग और बलिदान का श्रेष्ठ उदाहरण है केवल शमा''** पुरूष का

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

नारी के समान कोई वधु नहीं, इस बात के द्योतक अतीत से वर्तमान तक सारे युग रहे हैं। वैदिक युग में जब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में केवल पुरूषों का ही आधिपत्य था, तब गार्गी, मनु, मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियाँ हमारी ही भारत भूमि पर अपनी कीर्ति पताका फहरा रहीं थी। सीता जैसी देवी ने त्याग की प्रतिमूर्ति बन पुरूष के जीवन को प्रवंचनाओ का षिकार होने से बचाया तो विद्योत्मा जैसी ज्ञानवती स्त्री की प्ररेणा कालिदास की अमरता की गाथा बनी। न केवल ज्ञान के क्षेत्र में अपितु रणक्षेत्र में भी नारी स्वयं तलवार थाम चण्डी का रूप धर कहर बरपाया करती थी। सन् 1857 के महासंग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाली उस तेजस्विनी नारी को कैसे भुलाया जा सकता है जिसने सम्पूर्ण समाज की सोई हुई चेतना को जागृत कर दिया। 'खूब लडी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' के नारे को बुलंद करने वाला समाज क्या रजिया सुल्तान, जीजाबाई और मीराबाई जैसी हस्तियों के अमूल्य योगदान का ऋणी नहीं है ?

धीरे–2 नारी ने गुलामअली की इस पंक्ति 'चुपके – 2 रात दिन आँसू बहाना याद है' को दरकिनार कर दिया है। चाहे वह राष्ट्र निर्माण की बात हो अथवा राजनीति की, संस्कृति, साहित्य अथवा कला के क्षेत्र की नारी सदैव पुरूषों से श्रेष्ठ ही रही है। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू, सुभद्रा कुमारी चौहान, **IRON LADY** इंदिरा गाँधी समाज में अग्रणी रही हैं। अपने शैषवकाल मे ही महात्मा गाँधी जैसे महापुरूषों का ध्यान आकर्षित करने वाली महादेवी वर्मा न केवल कवयित्री अपितु षिक्षिका और समाज सेविका के रूप में भी ख्याति अर्जित कर चुकी हैं। विजय लक्ष्मी पण्डित ने तो संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा की अध्यक्षता करके नारी जाति का मस्तक सदैव के लिए उन्नत कर दिया है। कहने की आवष्यकता नहीं जहाँ तेरोस्कोवा, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स ने अंतरिक्ष की उँची उडान भरी, बछेन्द्रीपाल ने एवरेस्ट की चढ़ाई, पीटी उषा, कर्णम मल्लेष्वरी, अनीता भारगव, सानिया मिर्जा ने खेलों के क्षेत्र में और किरण बेदी जैसी कर्मठमना स्त्री ने देष रक्षा जैसे नारी– वर्जित क्षेत्र में देष की नारियों का प्रतिनिधित्व कर उनमें आत्मगौरव को जागृत किया है वहीं PEPSICO

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

COMPANY की CEO इंदिरा नूई, विष्व के दूसरे सर्वश्रेष्ठ बैंक ICICI की MD चन्द्रा कोछड जैसी प्रखर नारियों ने महिला सषक्तिकरण का एक आदर्ष प्रस्तुत किया है।

ये तो थी नारी की उपलब्धियों की बात। पर क्या आप ममतामयी, लावण्यमयी, सम्पर्णषील MOTHER TERASA को भूल गए, जिन्होने पीड़ित मानवता पर सहानुभूति एवं स्नेह का चंदनलेप कर उनमें आत्मविष्वास एवं करूणा का संचार किया। उन्होने देष के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न, एषिया महादीप के सर्वश्रेष्ठ मैगसेस पुरस्कार, यहाँ तक कि विष्व के महानतम पुरस्कार नोबल पुरस्कार तक पर अपना नाम अंकित कर दिया है।

यहां मै आप सभी का ध्यान नारी के एक अत्यंत समान्य स्वरूप की ओर भी आकर्षित करना चाहूंगी जो अपेक्षित होने के बावजूद भी अत्यंत महत्वपूर्ण है वह है श्रमिक महिला का। श्रमसाध्य कार्यों में इन श्रमिक महिलाओं का मुख्य हाथ रहता है। वास्तव में तो नारी ही राष्ट्र का आधार स्तम्भ है, क्योंकि जिस समाज और परिवार से मिलकर राष्ट्र बनता है उसका आधार बिन्दु नारी ही है। नारी ने इस मिथ्या दलील को भी ठुकरा दिया है कि उसके पास घर के बाद बाहर कुछ करने का समय ही नहीं मिलता। क्या आज की नारी ही तो षिक्षिका बनकर देष की भावी पीढ़ी को षिक्षित नहीं कर रही है ? उनकी ये धारणा कि आधुनिक षिक्षित नारी आदर्ष गृहिणी का पर्याय नहीं हो सकती उनके भ्रम का द्योतक है, जबकि सत्य तो यह है कि जिस प्रकार खराब बीज से एक अच्छे और विषाल वृक्ष का निर्माण संभव नहीं है, उसी प्रकार अषिक्षित नारी भी बच्चों में उच्च संस्कारों और राष्ट्र भावना का संचार नहीं कर सकती । यह तो पुरूषों की स्वार्थवृति और जड़ मानसिकता ही है जो नारी को उसके विकास के अवसरों से वंचित रखते हैं। वे सिद्वान्तों को तैयार तो कर देते हैं, पर उनके अंदर जड हो चुके संस्कार उन्हे लागू नहीं होने देते। नारी की तेजस्विता, विलक्षणता और उसके दृढ़ इरादे पुरूष को हर पल उनके कमजोर पड रहे मनोबल का अहसास कराते हैं, जिसका परिणाम होता है केवल अत्याचार। अंत में मैं अपने विचारों को इन चुनौतीपूर्ण पंक्तियों के साथ यहीं समेटती हूँ –

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

पुरूष प्रधान समाज तूने मुझे बहुत रूलाया
मान अबला नारी, मुझे बहुत रूलाया
नारी को ही नारी का दुष्मन बनाया
किया एक माँ को मजबूर, कोख में ही मुझे मरवाया
पर क्या भूल गए तुम,
मर्द हमने ही तुम्हे बनाया
देकर माँ की ममता, बहन का दुलार
और पत्नी का प्यार
तुम्हे, तुम्हारे अस्तित्व का अहसास दिलाया
पर तुमने क्या किया
हर पल हमे सिर्फ दुत्कारा
देखो, जागो, उठो अब वक्त ने करवट बदल ली
आज की नारी अबला नहीं, केवल श्रद्धा नहीं
अपितु एक व्यक्तित्व है
सबल और मजबूत व्यक्तित्व
जो बनाना चाहती है अपनी पहचान
और चाहती है पंख लगाके उड़ना
कर लेने को मुठ्ठी में सारा आसमान।